AL WAZIFATUL KAREEMA (HINDI)

मुख़्तलिफ़ अवक़ात में पढ़े जाने वाले वज़ाइफ़ और दुआओं पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

अल वज़ीफ़तुल करीमा

मुसन्निफ़

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عليه رحمة الرحمن

सुब्हो शाम के अवराद व वज़ाइफ़	12
सांप, बिच्छू वग़ैरा से हिफ़ाज़त के लिये	14
शैतान और उस के लश्करों से हिफ़ाज़त के लिये	18
दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब महफ़ूज़ हों	18
क़र्ज़ की अदाएगी के लिये	19
पांचों नमाज़ों के बा'द के अवराद	22
सोते वक़्त के वज़ाइफ़	30

المدينة العلمية (دعوتِ اسلامی)

مکتبة المدينه (دعوتِ اسلامی)

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساكر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

अल वज़ीफ़तुल करीमा

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने येह किताब "उर्दू" ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब को हिन्द की **राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी"** में रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (TRANSLATION) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (TRANSLITERATION) या'नी ज़बान तो उर्दू ही है जब कि लीपि हिन्दी रखी है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए SMS या E-MAIL) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर चार्ट

त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ

अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص	श = ش	स = س
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق	फ़ = ف	ग़ = غ	' = ءُ
य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل	घ = گھ
् = ْ	ु = ُ	ि = ِ	- = َ	ी = ئ	ू = وُ	ा = آ

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम, हिन्दी - गुजराती (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

मुख़्तलिफ़ अवक़ात में पढ़े जाने वाले वज़ाइफ़ और दुआ़ओं
पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

अल वज़ीफ़तुल करीमा

-: मुसन्निफ़ :-

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللّٰه تعالٰی عَلَيْه)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना, अह़मदाबाद

www.dawateislami.net

الصلوٰۃ والسلام علیک یارسول اللہ   وعلیٰ اٰلک واصحابک یا حبیب اللہ

नाम रिसाला : अल वज़ीफ़तुल करीमा

मुसन्निफ़ : आ'ला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत
इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

सिने तबाअत : जुल क़ा'दतिल हराम, सि. 1435 हि.

नाशिर : मक्तबतुल मदीना, अहमदाबाद-1

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाखें :-

...अहमदाबाद : फ़ैज़ाने मदीना, तीकोनी बाग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदाबाद, गुजरात -1, फ़ोन : 9327168200

... मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429

... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 09373110621

.... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह,फ़ोन : (0145) 2629385

....हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

... हैदराबाद : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

... कानपूर : मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपूर, फ़ोन : 09335272252

... बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं ।

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

नम्बर शुमार	उ़न्वान	सफ़्हा नम्बर
1	अल वज़ीफ़तुल करीमा पढ़ने की निय्यतें	4
2	पेशे लफ़्ज़	8
3	ख़ुत़्बा (अज़ : मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان)	10
4	सुब्ह़ो शाम की ता'रीफ़	12
5	सुब्ह़ो शाम पढ़ने के अवराद	12
6	सुब्ह़ पढ़ने के अवराद	21
7	पांचों नमाज़ों के बा'द के अवराद	22
8	नमाज़े सुब्ह़ व अ़स्र के बा'द के अवराद	25
9	नमाज़े सुब्ह़ के बा'द के अवराद	25
10	नमाज़े मग़रिब के बा'द के अवराद	26
11	रात में पढ़ने के अवराद	27
12	बा'द नमाज़े इ़शा के अवराद	28
13	सोते वक़्त के अ़मलियात	30
14	बेदार होने पर पढ़ने के अवराद	34
15	तहज्जुद	34
16	ज़िक्रे चहार ज़र्बी	35
17	ज़िक्रे ख़फ़ी	36
18	पासे अनफ़ास	37
19	तसव्वुरे शैख़	37
20	माख़ज़ो मराजेअ़	39

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"अल्लाह को बहुत याद करो" (उर्दू) के पन्दरह हुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की "15 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : "अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।" (الجامع الصغیر،الحدیث ۹۳۲۶،ص ۵۵۷، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो म-दनी फूल : ﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़्हे पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ालअ़ा करूंगा ﴾7﴿ ज़िक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत ह़ासिल करूंगा ﴾8﴿ कुछ न कुछ अवराद को अपना मा'मूल बनाऊंगा (बिल ख़ुसूस नमाज़ों के बा'द के अवराद) ﴾9﴿ जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां "عَزَّوَجَلَّ" और ﴾10﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां "صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم" पढ़ूंगा ﴾11﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा : "فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۙ" **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।" (پ۱۴، النحل:۴۳) पर अ़मल करते हुए उ़-लमा से रुजूअ़ करूंगा। ﴾12﴿ अवराद पढ़ने से पहले किसी सुन्नी क़ारी या

www.dawateislami.net

आ़लिम को सुना कर अपने मख़ारिज की दुरुस्ती करूंगा ﴾13﴿ हर विर्द के अव्वल आख़िर कम अज़ कम एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ूंगा ﴾14﴿ तमाम उम्मत को इस का ईसाले सवाब करूंगा ﴾15﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लती मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा । (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़्लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

*अच्छी अच्छी **निय्यतों** से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का सुन्नतों भरा बयान “**निय्यत का फल**” और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा **कार्ड** और **पेम्फ़लेट** **मक्तबतुल मदीना** की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं ।*

इमामा और साइन्स

जदीद साइन्सी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ मुस्तक़िल त़ौर पर इमामा शरीफ़ सजाने वाला ख़ुश नसीब मुसलमान फ़ालिज और ख़ून की वजह से जनम लेने वाली बा'ज़ बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहता है । क्यूंकि इमामा शरीफ़ सजाने की बरकत से दिमाग़ की त़रफ़ जाने वाली ख़ून की बड़ी बड़ी नालियों में ख़ून का दबाव सिर्फ़ ज़रूरत की ह़द तक रहता है और ग़ैर ज़रूरी ख़ून दिमाग़ तक नहीं पहुंच पाता लिहाज़ा अमरीका में फ़ालिज के इलाज के लिये इमामा नुमा “मास्क” (Mask) बनाया गया है ।

(म-दनी पंजसूरह, स.13 अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه)

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

*अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی اِحْسَانِہٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِہٖ صلّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और **इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये **मुतअ़द्दद मजालिस** का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो **दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम** كَثَّرَهُمُ اللّٰه تعالٰی पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-रकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शमए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो ब-रकत, ह़ज़रते

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी **शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है । तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म–दनी काम में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़–मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए । اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

र–मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

पेशे लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

कुरआने करीम में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इर्शादे आलीशान है :

فَاِذَا قَضَیْتُمُ الصَّلٰوۃَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ قِیٰمًا وَّ قُعُوْدًا (پ٥، النسآء: ١٠٣) ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो अल्लाह की याद करो खड़े और बैठे।*

सदरुल अफ़ाज़िल हज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی इस आयए मुबारका के तह़त ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में फ़रमाते हैं : "या'नी ज़िक्रे इलाही की हर ह़ाल में मुदावमत करो और किसी ह़ाल में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न रहो। हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला ने हर फ़र्ज़ की एक ह़द मुअ़य्यन फ़रमाई सिवाए ज़िक्र के, इस की कोई ह़द न रखी, फ़रमाया : ज़िक्र करो खड़े बैठे, करवटों पर लेटे, रात में हो या दिन में, ख़ुश्की में हो या तरी में, सफ़र में और हज़र में, ग़िना में और फ़क़्र में, तन्दुरुस्ती और बीमारी में, पोशीदा और ज़ाहिर।"

मक्की म-दनी सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमियान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल येह है कि तुम्हारी मौत इस ह़ाल में आए कि तुम्हारी ज़बान अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से तर हो।" (الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث:١٩٨، ص١٩)

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जिस ने दिन की इब्तिदा किसी अच्छे काम से की और अपने दिन को अच्छे काम ही पर ख़त्म किया तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने फ़िरिश्तों से फ़रमाएगा : "इन दोनों के दरमियान जो गुनाह (सग़ीरा) हैं उन्हें मत लिखो।" (الجامع الصغیر للسیوطی، الحدیث:٨٤٢٣، ص٥١٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! कुरआनो ह़दीस में ज़िक्रुल्लाह की बहुत ताकीद फ़रमाई गई है और इस के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं, इन्सान को चाहिये कि वोह अपने दिल और ज़बान को ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रखे और

www.dawateislami.net

किसी सख़्ती व परेशानी में भी इस से ग़ाफ़िल न हो। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِیْن ने अपनी ज़िन्दगियां अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में गुज़ारीं और अपने मुतअ़ल्लिक़ीन को भी फ़राइज़ व वाजिबात की पाबन्दी के साथ साथ हर वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने की ताकीद व तल्क़ीन फ़रमाते रहे, बल्कि उम्मत की ख़ैर ख़्वाही के मुक़द्दस जज़्बे के तहत उन्हों ने कुरआनो ह़दीस और दीगर रिवायात की रोशनी में मुख़्तलिफ़ अज़्कार को जम्अ़ कर दिया और सुब्ह़ो शाम और दिन रात में इन को मख़्सूस ता'दाद में पढ़ने की तरग़ीब दिलाई ताकि इन पर अ़मल करने वालों के दिलों की जिला हो और उन्हें दुन्या व आख़िरत की भलाइयां नसीब हों। आ'ला ह़ज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْمَنَّان ने भी अवरादो वज़ाइफ़ का एक मज्मूआ़ मुरत्तब फ़रमाया जो **"अल वज़ीफ़तुल करीमा"** के नाम से मश्हूर है जिस में आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه ने सुब्ह़ो शाम और पांचों नमाज़ों के बा'द के विर्दो वज़ाइफ़ और उन के फ़ज़ाइल तह़रीर फ़रमाए हैं और साथ ही ज़िक्रे ख़फ़ी के पांच मख़्सूस त़रीक़े भी ज़िक्र कर दिये हैं नीज़ आख़िर में तसव्वुरे शैख़ का त़रीक़ा भी इर्शाद फ़रमा दिया है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें इन अवराद से मुस्तफ़ीद होने की तौफ़ीक़े रफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमाए और फ़ैज़ाने औलिया से हमें मालामाल फ़रमाए। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **"दा'वते इस्लामी"** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** के म-दनी उ़-लमा دامت فیوضھم ने इस मज्मूए़ को भी जदीद अन्दाज़ में पेश करने की सअ़्य की और इस ग़रज़ से तमाम अवराद की ह़त्तल मक़्दूर अस्ल मसादिर से तत़बीक़ की और ह़वाशी की सूरत में इन के ह़वालाजात और साथ ही इन दुआ़ओं का तर्जमा भी तह़रीर कर दिया है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उ़-लमाए किराम دامت فیوضھم की इस मेह़नत पर इन्हें बेहतरीन जज़ा अ़त़ा फ़रमाए और इन के इ़ल्मो अ़मल में ब-र-कतें दे और दा'वते इस्लामी की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** और दीगर मजालिस को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْه (मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

حَامِدًا لِّمَنْ جَعَلَ الدُّعَآءَ عِبَادَةً بَلْ مُخَّ الْعِبَادَةِ
وَ اَمَرَ بِاُدْعُوْنِیْ عِبَادَہٗ وَ اَلْزَمَہٗ بِوَعْدِہِ الْاِجَابَةَ وَمَنْ
دَعَا رَبَّہٗ لَبَّیْكَ یَا عَبْدِیْ اَجَابَہٗ قَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْٓ
اَسْتَجِبْ لَكُمْ وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ
اُجِیْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ فَاِنَّہٗ سَمِیْعٌ مُّجِیْبٌ وَّ
مُصَلِّیًا وَّ مُسَلِّمًا عَلٰی مَنِ اخْتَبَا دَعْوَتَہُ الْمُسْتَجَابَةَ
لِیَوْمِ الْمَثَابَةِ وَعَلٰٓی اٰلِہٖ وَ اَصْحَابِہٖ مَا انْهَلَّ الدِّیَمُ
مِنَ السَّحَابَةِ ط اٰمِیْن

हम्द[1] उस के वजहे करीम को जिस ने हमें मौलाए आलम, वालिये आ'ज़म मुहम्मद रसूलुल्लाह صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی آلہ واصحابہ وسلم के बन्दगाने बारगाहे आलम पनाह में किया, हमारे हाथ में हुज़ूर पुरनूर सय्यिदुना ग़ौसुल आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ का दामने करम दिया, अपने औलिया, हमारे मशाइख़े सिल्सिला ख़ुसूसन हमारे आक़ा व मौला हुज़ूर सय्यिदुना आ'ला हज़रत क़िब्ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ का सायए रहमत हम पर दराज़ किया, जिन्हों ने हम तक पहुंचाया कि तुम्हारा हया वाला रब्बे करीम हया फ़रमाता है कि बन्दा उस के हुज़ूर

1.... हुज़ूर पुरनूर सय्यिदुना आ'ला हज़रत क़िब्ला رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنْہ ने बतौरे तम्हीद कुछ तहरीर फ़रमाना चाहा था मगर वोह जवाहिर ज़वाहिर मिस्ल दुर्रे मक्नून सीनए अक़्दस में मख़्ज़ून रहे दिल ने न चाहा कि इन अल्फ़ाज़े करीमा से एक हर्फ़ भी कम हो, इन्हें बिजिन्सिही नक़्ल कर के कि येह यहीं तक थे, जो फ़हमें क़ासिर में आया हदिय्यए नाज़िरीन किया, इस रिसाले का नाम भी कुछ न तजवीज़ फ़रमाया था, तारीख़ी नाम और ख़ुत्बा फ़क़ीर ने इज़ाफ़ा किया।

गदाए आस्तानए क़ुदसिय्या रज़विय्या

फ़क़ीर मुहम्मद हामिद रज़ा क़ादिरी غفرلہ (ورحمۃ اللہ علیہ)

www.dawateislami.net

हाथ फैलाए और वोह ख़ाली हाथ फैर दे, हमें ख़ुद हुक्मे दुआ़ दिया और अपने करम से इजाबत को लाज़िम फ़रमाया :

فَعَلَيْكُمْ بِالدُّعَاءِ فَاِنَّ الدُّعَاءَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ بَعْدَ اَنْ يُّبْرَمَ

बारगाहे करम सय्यिदे अकरम صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی آلہ واصحابہ وسلم से हुज़ूर पुरनूर सय्यिदुना आ'ला ह़ज़रत क़िब्ला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के हाथों जो मुबारक दुआ़एं हमें पहुंचीं और जो अज़्कारो अशग़ाल दुर्रे मक्नून की त़रह़ ख़ानदाने आ़लिया में मख़्ज़ून थे, बिरादराने अहले सुन्नत व ख़्वाजा ताशाने क़ादिरिय्यत व र-ज़विय्यत के लिये शाएअ़ करते और दा'वे से कहते हैं कि इन का आ़मिल दीनो दुन्या की ने'मतों से माला माल होगा, हर बला व आफ़त से मह़फ़ूज़ रहेगा, मौला तआ़ला इन की बरकात से तमाम अहले सुन्नत को मुस्तफ़ीज़ फ़रमाए । आमीन आमीन !

गदाए आस्तानए कुदसिय्या रज़विय्या

फ़क़ीर मुह़म्मद ह़ामिद रज़ा क़ादिरी غفرلہ (ورحمۃ اللہ علیہ)

दा'वते इस्लामी *के* ***सुन्नतों की तर्बिय्यत*** *के* ***म-दनी क़ाफ़िलों*** *में सफ़र और रोज़ाना* ***फ़िक्रे मदीना*** *के ज़रीए़* ***म-दनी इन्आ़मात का कार्ड*** *पुर कर के हर* ***म-दनी माह*** *के दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मादार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये ।* اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ *इस की बरकत से* ***पाबन्दे सुन्नत*** *बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और* ***ईमान की ह़िफ़ाज़त*** *के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा ।*

www.dawateislami.net

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

सुब्ह़ो शाम दोनों वक़्त

आधी रात ढले से सूरज की किरन चमकने तक सुब्ह़ है, इस बीच में जिस वक़्त इन दुआओं को पढ़ लेगा सुब्ह़ में पढ़ना हो गया, यूंही दोपहर ढलने से ग़ुरूबे आफ़ताब तक शाम है।

﴾1﴿ سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ مَاشَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا (1)

एक एक बार

﴾2﴿ आयतुल कुर्सी(2) एक एक बार और इस के बा'द

---

❶.... *तर्जमा : पाक है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपनी ता'रीफ़ के साथ, नेकी की तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है, जो उस ने चाहा वोही हुवा और जो न चाहा वोह न हुवा, मैं जानता हूं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब कुछ कर सकता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का इ़ल्म हर चीज़ को मुह़ीत़ है।*

❷.... اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَۚ وَلَا یَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَاۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾

(پ۳،البقرۃ:۲۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे और वोह नहीं पाते उस के इ़ल्म में से मगर जितना वोह चाहे उस की कुर्सी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन और उसे भारी नहीं उन की निगेहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला

www.dawateislami.net

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ط حٰمٓ ۚ﴿۱﴾ تَنۡزِیۡلُ الۡکِتٰبِ مِنَ اللّٰہِ الۡعَزِیۡزِ الۡعَلِیۡمِ ۙ﴿۲﴾
غَافِرِ الذَّنۡۢبِ وَ قَابِلِ التَّوۡبِ شَدِیۡدِ الۡعِقَابِ ۙ ذِی الطَّوۡلِ ؕ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا ہُوَ ؕ اِلَیۡہِ الۡمَصِیۡرُ ﴿۳﴾ (1)

एक एक बार

﴾3﴿ तीनों (2)" قُلْ " तीन तीन बार

इन तीनों नम्बरों का फ़ाइदा हर बला से महफ़ूज़ी है, सुब्ह पढ़े

1.... *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला येह किताब उतारना है अल्लाह की त़रफ़ से जो इ़ज़्ज़त वाला इ़ल्म वाला गुनाह बख़्शने वाला और तौबा क़बूल करने वाला सख़्त अ़ज़ाब करने वाला बड़े इन्आ़म वाला उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं उसी की त़रफ़ फिरना है।*

2...... قُلۡ ہُوَ اللّٰہُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰہُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ وَ لَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ ٪﴿۴﴾ (پ ۳۰، الاخلاص)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है अल्लाह बे नियाज़ है न उस की कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ٪﴿۵﴾ (پ ۳۰، الفلق)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह का पैदा करने वाला है उस की सब मख़्लूक़ के शर से और अन्धेरी डालने वाले के शर से जब वोह डूबे और उन औ़रतों के शर से जो गिर्हों में फूंकती हैं और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले।

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِکِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰہِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۬ۙ الۡخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیۡ یُوَسۡوِسُ فِیۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّۃِ وَ النَّاسِ ٪﴿۶﴾ (پ ۳۰، الناس)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब सब लोगों का बादशाह सब लोगों का ख़ुदा उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले और दबक रहे वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं जिन्न और आदमी।

www.dawateislami.net

तो शाम तक और शाम पढ़े तो सुब्ह़ तक।[1]

﴾4﴿ بِسۡمِ اللهِ مَا شَآءَ اللهُ لَا یَسُوۡقُ الۡخَیۡرَ اِلَّا اللهُ مَا شَآءَ اللهُ لَا یَصۡرِفُ السُّوۡٓءَ اِلَّا اللهُ مَا شَآءَ اللهُ مَا کَانَ مِنۡ نِّعۡمَۃٍ فَمِنَ اللهِ مَا شَآءَ اللهُ لَاحَوۡلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِاللهِ (2)

तीन तीन बार। इस का फ़ाइदा सात चीज़ों से पनाह : ﴾1﴿ जलना ﴾2﴿ डूबना ﴾3﴿ चोरी ﴾4﴿ सांप ﴾5﴿ बिच्छू ﴾6﴿ शैत़ान ﴾7﴿ सुल्त़ान।[3]

सुब्ह़ से शाम तक और शाम से सुब्ह़ तक।

﴾5﴿ اَعُوۡذُ بِکَلِمَاتِ اللهِ التَّآمَّاتِ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ (4)

तीन तीन बार। सांप, बिच्छू वग़ैरा मूज़िय्यात से पनाह हो।[5]

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح، الحدیث: ۵۰۸۲، ۵۰۵۷، ج ۴، ص ۴۱۴، ۴۱۶ و سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ما جاء فی فضل سورۃ البقرۃ و آیۃ الکرسی، الحدیث: ۲۸۸۸، ج ۴، ص ۴۰۲

2 .... तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से مَاشَآءَاللہ ख़ैर और भलाई सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही अ़त़ा फ़रमाता है مَاشَآءَاللہ बुराई और मुसीबत को सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही दूर फ़रमाता है مَاشَآءَاللہ हर ने'मत अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से है مَاشَآءَاللہ गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है।

3 ......الدر المنثور، سورۃ الکھف، تحت الآیۃ: ۸۲، ج ۵، ص ۴۳۴

4 .... तर्जमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के पूरे और कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक़ के शर से पनाह लेता हूं।

5 ......سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی الاستعاذۃ، الحدیث: ۳۶۱۶، ج ۵، ص ۳۴۶

www.dawateislami.net

﴾6﴿ بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ (1)

तीन तीन बार। ज़हर व ज़रर से अमान रहे।

﴾7﴿ رَضِیْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِیْنًا وَّ بِسَیِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَبِیًّا وَّ رَسُوْلًا (2)

तीन तीन बार

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम पर हक़ है कि रोज़े क़ियामत उसे राज़ी करे।(3)

﴾8﴿ حَسْبِیَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ ﴿۱۲۹﴾ (4)

दस दस बार

हर बला व मक्र से महफ़ूज़ी, हदीस में सात बार फ़रमाया।(5) हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से दस बार आया, फ़क़ीर का इसी पर अ़मल है, इसे बिहम्दिल्लाहि तआ़ला तमाम मक़ासिद के लिये काफ़ी पाया।

1... *तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम से, जिस के नाम से कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचाती न ज़मीन में और न आस्मान में और वोही है सुनने और जानने वाला।*

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح، الحدیث:٥٠٨٨، ج٤، ص٤١٨)

2... *तर्जमा : मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रब, इस्लाम के दीन और मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी और रसूल होने पर राज़ी हूं।*

3......المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الدعاء، باب ما یستحب ان یدعوا به اذا اصبح، الحدیث:٨، ج٧، ص٤١

4... *तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुझे अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।* (پ١١، التوبة: ١٢٩)

5......الدر المنثور، سورة التوبة، تحت الآیة: ١٢٩، ج ٤، ص ٣٣٤

www.dawateislami.net

﴿9﴾ فَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ حِيۡنَ تُمۡسُوۡنَ وَحِيۡنَ تُصۡبِحُوۡنَ ﴿۱۷﴾ وَلَهُ الۡحَمۡدُ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَعَشِيًّا وَّحِيۡنَ تُظۡهِرُوۡنَ ﴿۱۸﴾ يُخۡرِجُ الۡحَيَّ مِنَ الۡمَيِّتِ وَيُخۡرِجُ الۡمَيِّتَ
مِنَ الۡحَيِّ وَيُحۡيِ الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا ؕ وَكَذٰلِكَ تُخۡرَجُوۡنَ ﴿۱۹﴾ (1)

एक एक बार

जिस से किसी दिन सब वज़ाइफ़ रह जाएं तो येह तन्हा इन सब की जगह काफ़ी है नीज़ रात दिन के हर नुक़्सान की तलाफ़ी है।

﴿10﴾ اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا ख़त्म सूरह तक (2) एक एक बार शैतान व जिन्न व आफ़ात से महफ़ूज़ी।

1.... ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह हो और उसी की ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में और कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दोपहर हो वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता है उस के मरे पीछे और यूंही तुम निकाले जाओगे।* (پ۲۱، الروم: ۱۷-۱۹)

(الدر المنثور، سورة الروم، تحت الآية: ۱۷، ج۶، ص۴۸۹)

2...... اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا وَّاَنَّكُمۡ اِلَيۡنَا لَا تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۱۵﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡكَرِيۡمِ ﴿۱۱۶﴾ وَمَنۡ يَّدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرۡهَانَ لَهُ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهُ عِنۡدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهُ لَا يُفۡلِحُ الۡكٰفِرُوۡنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلۡ رَّبِّ اغۡفِرۡ وَارۡحَمۡ وَاَنۡتَ خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۱۸﴾

(پ۱۸، المؤمنون: ۱۱۵-۱۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *तो क्या येह समझते हो कि हम ने तुम्हें बेकार बनाया और तुम्हें हमारी त़रफ़ फिरना नहीं तो बहुत बुलन्दी वाला है **अल्लाह** सच्चा बादशाह कोई मा'बूद नहीं सिवा उस के इज़्ज़त वाले अ़र्श का मालिक और जो **अल्लाह** के साथ किसी दूसरे ख़ुदा को पूजे जिस की उस के पास कोई सनद नहीं तो उस का हिसाब उस के रब के यहां है बेशक काफ़िरों को छुटकारा नहीं और तुम अ़र्ज़ करो ऐ मेरे रब बख़्श दे और रह़्म फ़रमा और तू सब से बरतर रह़्म करने वाला।*

www.dawateislami.net

﴾11﴿[1] اَعُوْذُ بِاللّٰہِ السَّمِیْعِ الْعَلِیْمِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ तीन बार

फिर هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ सूरए हश्र की अख़ीर तीन आयतें[2] एक बार

सुब्ह़ पढ़े तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करें और उस दिन मरे तो शहीद हो और शाम को पढ़े तो सुब्ह़ तक येही हुक्म है ।[3]

﴾12﴿ اَللّٰھُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ مِنْ اَنْ نُّشْرِكَ بِكَ شَيْئًا نَّعْلَمُهٗ وَ نَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا نَعْلَمُهٗ [4]

तीन तीन बार । ख़ातिमा ईमान पर हो ।

﴾13﴿[5] بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی دِیْنِیْ بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰی نَفْسِیْ وَ وُلْدِیْ وَ اَھْلِیْ وَ مَالِیْ

1.... *तर्जमा :* मैं **अल्लाह** समीअ़ अ़लीम की पनाह मांगता हूं शैत़ान मरदूद से ।

2......هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۲۲﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ﴿۲۳﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ یُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۲۴﴾ (پ۲۸،الحشر:۲۲۔۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही **अल्लाह** है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं हर निहां व इ़यां का जानने वाला वोही है बड़ा मेहरबान रह़मत वाला वोही है **अल्लाह** जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं बादशाह निहायत पाक सलामती देने वाला अमान बख़्शने वाला ह़िफ़ाज़त फ़रमाने वाला इ़ज़्ज़त वाला अ़ज़मत वाला तकब्बुर वाला **अल्लाह** को पाकी है उन के शिर्क से वोही है **अल्लाह** बनाने वाला पैदा करने वाला हर एक को सूरत देने वाला उसी के हैं सब अच्छे नाम उस की पाकी बोलता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है ।

3......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحدیث: ۲۹۳۱، ج۴، ص۴۲۳

4.... *तर्जमा :* ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरी पनाह मांगते हैं इस बात से कि जान बूझ कर किसी शै को तेरा शरीक बनाएं और हम बख़्शिश मांगते हैं तुझ से उस (शिर्क) की जिस को हम नहीं जानते ।

(المسند للامام احمد بن حنبل، مسندالکوفیین، الحدیث: ۱۹۶۲۵، ج۷، ص۱۴۶)

5.... *तर्जमा :* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम की बरकत से मेरे दीन, जान, अवलाद और अहलो माल की ह़िफ़ाज़त हो ।

www.dawateislami.net

तीन तीन बार दीन, ईमान, जान, माल, बच्चे सब मह़फ़ूज़ रहें।[1]

﴿14﴾ اَللّٰھُمَّ مَا اَصْبَحَ بِیْ مِنْ نِّعْمَۃٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَا شَرِیْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ (2)

एक एक बार सुब्ह़ को कहे तो दिन भर की सब ने'मतों का शुक्र अदा किया और शाम को पढ़े तो शब भर की।[3]

शाम को "اَصْبَحَ" की जगह "اَمْسٰى" कहे। फ़क़ीर इस के बा'द لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ (4) ज़ाइद करता है।

﴿15﴾ بِسْمِ اللّٰهِ جَلِیْلِ الشَّاْنِ عَظِیْمِ الْبُرْهَانِ شَدِیْدِ السُّلْطَانِ مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ (5)

एक एक बार शैत़ान और उस के लश्करों से मह़फ़ूज़ रहे।[6]

---

1 ...... فیض القدیرشرح الجامع الصغیر،الحدیث:٦١٣٩،٦١٤٠،ج٤، ص٦٨٣

2 .... **तर्जमा :** या **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ मैंने या तेरी मख़्लूक़ में से किसी ने जिन ने'मतों के साथ सुब्ह़ की तो वोह तेरी ही त़रफ़ से हैं तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं, तमाम ता'रीफ़ें और शुक्र तेरे लिये हैं।

3 ...... شعب الایمان للبیهقی،باب فی تعدید نعم اللّٰه...الخ،الحدیث:٤٣٦٨،ج٤،ص٨٩

4 .... **तर्जमा :** कोई मा'बूद नहीं सिवा तेरे, पाकी है तुझ को बेशक मुझ से बेजा हुवा।

5 .... **तर्जमा : अल्लाह** जलीलुश्शान, अ़ज़ीमुल बुरहान, शदीदुस्सुल्त़ान के नाम से इब्तिदा, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता है वोही होता है, मैं पनाह मांगता हूं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शैत़ान मरदूद से।

6 ...... فردوس الاخبار للدیلمی، باب المیم، الحدیث: ٦٤٥٩، ج٢، ص٣١٦

www.dawateislami.net

﴾16﴿ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَصۡبَحۡتُ اُشۡھِدُكَ وَاُشۡھِدُ حَمَلَةَ عَرۡشِكَ وَمَلٰٓئِكَتَكَ
وَجَمِیۡعَ خَلۡقِكَ اِنَّكَ اَنۡتَ اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّاۤ اَنۡتَ وَحۡدَكَ لَاشَرِیۡكَ لَكَ
وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُكَ وَرَسُوۡلُكَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ (1)

चार चार बार हर बार चहारुम ह़िस्सए बदन दोज़ख़ से आज़ाद हो।(2) शाम को “اَصۡبَحۡتُ” की जगह “اَمۡسَیۡتُ” कहे।

﴾17﴿ اَللّٰھُمَّ لَكَ الۡحَمۡدُ حَمۡدًا دَآئِمًا مَّعَ دَوَامِكَ وَلَكَ الۡحَمۡدُ حَمۡدًا
خَالِدًا مَّعَ خُلُوۡدِكَ وَلَكَ الۡحَمۡدُ حَمۡدًا لَّا مُنۡتَھٰی لَہٗ دُوۡنَ مَشِیۡئَتِكَ
وَلَكَ الۡحَمۡدُ حَمۡدًا عِنۡدَ كُلِّ طَرۡفَةِ عَیۡنٍ وَّتَنَفُّسِ كُلِّ نَفۡسٍ (3)

एक एक बार, गोया उस ने उस दिन रात पूरी इबादत का ह़क़ अदा किया।(4)

﴾18﴿ اَللّٰھُمَّ اِنِّیۡۤ اَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡھَمِّ وَالۡحُزۡنِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡعَجۡزِ
وَالۡكَسَلِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنَ الۡجُبۡنِ وَالۡبُخۡلِ وَاَعُوۡذُ بِكَ مِنۡ غَلَبَةِ الدَّیۡنِ وَقَھۡرِ الرِّجَالِ (5)

एक एक बार, ग़म व अलम से बचे, अदाए क़र्ज़ के लिये

1.... *तर्जमा : ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मैंने सुब्ह़ की, तुझे और तेरे अ़र्श के उठाने वालों और तेरे फ़िरिश्तों और तेरी सारी मख़्लूक़ को गवाह बनाते हुए कि अल्लाह सिर्फ़ तू ही है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तू अकेला है तेरा कोई शरीक नहीं और मुह़म्मद صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم तेरे बन्दे और रसूल हैं।*

2......سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مایقول اذا اصبح ، الحدیث:٥٠٦٩، ج٤، ص٤١٢

3.... *तर्जमा : ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये दाइमी ह़म्द है तेरे दवाम के साथ और तेरे लिये हमेशा रहने वाली ह़म्द है तेरी हमेशगी के साथ और तेरे लिये ऐसी ह़म्द है जिस की तेरी मशिय्यत के सिवा कोई इन्तिहा न हो और हर लम्ह़ा और हर सांस तेरे लिये ही है हर ह़म्द।*

4......المعجم الاوسط للطبرانی، من اسمه محمد، الحدیث:٥٥٣٨، ج٤، ص١٥٢ بالتغیر

5.... *तर्जमा : ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मैं ग़म व अलम, इ़ज्ज़ व सुस्ती, बुज़्दिली व बुख़्ल, क़र्ज़े के ग़लबे और लोगों के क़हर से तेरी पनाह मांगता हूं।*

www.dawateislami.net

ग्यारह ग्यारह बार पढ़े ।(1)

﴿19﴾ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ فَلَا تَكِلْنِيْٓ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ وَّ اَصْلِحْ لِيْ شَاْنِيْ كُلَّهٗ (2)

एक एक बार, सब काम बनें ।

﴿20﴾ اَللّٰهُمَّ خِرْ لِيْ وَاخْتَرْ لِيْ وَلَا تَكِلْنِيْٓ اِلٰٓى اِخْتِيَارِيْ (3)

सात सात बार, दिन रात के हर काम के लिये इस्तिख़ारा है ।

﴿21﴾ **सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार** एक एक या तीन तीन बार, गुनाह मुआ़फ़ हों और उस दिन रात में मरे तो शहीद, वोह येह है :

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلٰى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْٓءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْٓءُ لَكَ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَاِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّآ اَنْتَ (4)

---

1 ......سنن ابی داود، کتاب الصلوۃ، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذۃ، الحدیث:۱۵۵۵، ج۲، ص۱۳۳

2 .... *तर्जमा : ऐ ह़य्य ! ऐ क़य्यूम ! तेरी रह़मत के साथ मैं तुझ से फ़रयाद करता हूं कि एक पल के लिये भी मुझे मेरे नफ़्स के सिपुर्द न करना और मेरे तमाम ह़ाल को दुरुस्त कर दे ।*

3 .... *तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये बेहतर मुआ़मला मुक़द्दर फ़रमा और उस में भलाई अ़त़ा फ़रमा और मुझे मेरे नफ़्स के सिपुर्द न फ़रमा ।*

(کشف الخفاء، حرف الخاء المعجمۃ، الحدیث:۱۲۷٤، ج۱، ص۳۵۲)

4 .... *तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तूने मुझे पैदा किया और मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़द्रे त़ाक़त तेरे अ़हदो पैमान पर क़ाइम हूं मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं और तेरी ने'मत का जो मुझ पर है इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा कोई गुनाह नहीं बख़्श सकता ।*

(السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ، الحدیث: ۱۰٤۱۷، ج٦، ص۱۵۰
وعمل الیوم واللیلۃ لابن السنی، باب مایقول اذا اصبح، الحدیث:٤۳، ص۲۲)

www.dawateislami.net

फ़क़ीर इस के बा'द इतना ज़ाइद करता है : وَاغْفِرْ لِكُلِّ مُؤْمِنٍ وَّمُؤْمِنَةٍ (1) और अपने जिस फे'ल से किसी ज़रर का अन्देशा होता है मौला तआ़ला मह़फ़ूज़ रखता है।

﴾22﴿ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ (2) सो सो बार

दुन्या में फ़ाक़ा न हो, क़ब्र में वह़शत न हो, ह़श्र में घबराहट न हो।(3)

सिर्फ़ सुब्ह़

﴾1﴿ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ (4)

हर काम बने, शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहे।(5)

﴾2﴿ सूरए इख़्लास(6) ग्यारह बार, अगर शैत़ान मअ़ अपने लश्कर के कोशिश करे कि इस से गुनाह कराए न करा सके जब तक कि येह खुद न करे।(7)

﴾3﴿ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ (8) इक्तालीस बार

उस का दिल ज़िन्दा रहेगा और ख़ातिमा ईमान पर होगा।

1.... *तर्जमा : और तमाम मोमिन मर्दों और औ़रतों की बख़्शिश फ़रमा।*

2.... *तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं जो सरीह़ सच्चा बादशाह है।*

3.... حلية الاولياء، ٤١٠ـ سالم الخواص، الحديث: ١٢٣١٢، ج٨، ص ٣٠٩ بالتغير.

4.... *तर्जमा : अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान रह़मत वाला, गुनाहों से बचने की त़ाक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ अल्लाह की त़रफ़ से है जो किब्रियाई और बड़ाई वाला है।*

5.... *बा'ज़ मत़बूओं में इस दुआ़ की कोई ता'दाद मज़्कूर नहीं और बा'ज़ में ग्यारह बार तह़रीर है।* وَاللّٰه تَعالٰی اَعلم

6.... قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ (پ٣٠، الاخلاص)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह अल्लाह है वोह एक है अल्लाह बे नियाज़ है न उस की कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।

7.... الدر المنثور، سورة الاخلاص، ج ٨، ص ٦٨١

8.... *तर्जमा : ऐ ह़य्य ! ऐ क़य्यूम ! तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।*

www.dawateislami.net

﴾4﴿ (1) سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ तीन बार

जुनून, जुज़ाम व बर्स व नाबीनाई से बचे।[2]

﴾5﴿ तिलावते कुरआने अज़ीम कम अज़ कम एक पारह, हत्तल इम्कान तुलूए शम्स से पहले हो और अगर आफ़्ताब निकल आए तो ठहर जाए और ज़िक्रो अज़्कार करे यहां तक कि आफ़्ताब बुलन्द हो जाए। जिन तीन वक़्तों में नमाज़ ना जाइज़ है तिलावत भी मकरूह है।

﴾6﴿ दलाइलुल ख़ैरात एक हिज़्ब

﴾7﴿ शजरा शरीफ़। दलाइल व शजरा क़ब्ले तुलूअ़ हों या बा'दे तुलूअ़।

पांचों नमाज़ों के बा'द

﴾1﴿ आयतुल कुर्सी[3] एक एक बार

मरते ही दाख़िले जन्नत हो।[4]

1.... तर्जमा : पाक है अल्लाह बड़ी अ़ज़मत वाला अपनी ता'रीफ़ के साथ।

2.... المسند للامام احمد بن حنبل، حديث قبيصة بن مخارق،الحديث:٢٠٦٢٥،ج٧،ص٣٥٢

3.... اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَۚ وَ لَا یَـٴُـوْدُهٗ حِفْظُهُمَاۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾ (پ٣،البقرة:٢٥٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से मगर जितना वोह चाहे उस की कुर्सी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन और उसे भारी नहीं उन की निगेहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला

4.... مشكاة المصابيح، كتاب الصلاة، باب الذكر بعد الصلاة، الحديث:٩٧٤،ج١،ص١٩٧

www.dawateislami.net

﴿2﴾ اَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْہِ (1)
तीन तीन बार, गुनाह मुआफ़ हों अगर्चे समुन्दर के झाग के बराबर हों।(2)

﴿3﴾ तस्बीह हज़रते सय्यिदतुना ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تعالٰی عنہا
"سُبْحٰنَ اللہ" तेंतीस बार "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" तेंतीस बार "اَللّٰہُ اَکْبَرُ" चोंतीस बार, अख़ीर में एक बार
لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (3)
उस दिन तमाम जहां में किसी का अ़मल इस के बराबर बुलन्द न किया जाएगा मगर उस का जो इस के मिस्ल पढ़े।(4)

﴿4﴾ माथे पर दहना हाथ रख कर
بِسْمِ اللہِ الَّذِیْ لَآ اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ اَللّٰھُمَّ اَذْھِبْ عَنِّی الْھَمَّ وَالْحُزْنَ (5)

1.... *तर्जमा : मैं मग़्फ़िरत तृलब करता हूं अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह ज़िन्दा है क़ाइम रखने वाला है और उसकी बारगाह में तौबा करता हूं।*

2......سنن الترمذی، احادیث شتی، ۱۱۷۔باب، الحدیث:۳۵۸۸، ج۵، ص۳۳۶ وعمل الیوم واللیلۃ لابن السنی، باب مایقول فی دبر الصلاۃ الصبح، الحدیث:۱۳۷، ص۵۱

3.... *तर्जमा : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ पाक है, सब ख़ूबियां अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये हैं, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ सब से बड़ा है, अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये ह़म्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।*

4......الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الصلاۃ، باب صفۃ الصلاۃ، فصل فی القنوت، ذکر البیان بانّ التسبیح والتحمید...الخ، الحدیث:۲۰۱۲، ج۳، ص۲۳۱

5.... *तर्जमा : अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम से जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह रह़मानो रह़ीम है, ऐ अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ मुझ से ग़म व मलाल दूर फ़रमा।*

(مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب الدعا فی الصلاۃ وبعدھا، الحدیث:۱۶۹۷۱، ج۱۰، ص۱۴۴)

www.dawateislami.net

हर ग़म व परेशानी से बचे, फ़क़ीर इस के बा'द इतना ज़ाइद करता है : (1) وَعَنْ اَهْلِ السُّنَّةِ

《5》 पंजगंज क़ादिरिय्या, बरकात बेशुमार हैं ।

बा'द नमाज़े फ़ज्र "يَا عَزِيْزُ يَا اَللّٰهُ"

बा'द नमाज़े ज़ोहर "يَا كَرِيْمُ يَا اَللّٰهُ"

बा'द नमाज़े अ़स्र "يَاجَبَّارُ يَا اَللّٰهُ"

बा'द नमाज़े मग़रिब "يَا سَتَّارُ يَا اَللّٰهُ"

बा'द नमाज़े इशा "يَاغَفَّارُ يَا اَللّٰهُ"

सो मरतबा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से बेहतर और पाकीज़ा अ़मल

*हज़रते सय्यिदुना अबुद्दर्दा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें तुम्हारे उस अ़मल के बारे में न बताऊं जो तुम्हारे रब عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक सब से बेहतर और पाकीज़ा है, तुम्हारे दरजात में सब से ऊंचा और तुम्हारे लिये सोना और चांदी ख़र्च करने से बेहतर है, तुम्हारे लिये दुश्मनों से लड़ने और उन की गर्दनें काटने या अपनी गर्दन कटवाने से बेहतर है ?" सहाबए किराम رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ ने अ़र्ज़ किया : "ज़रूर इर्शाद फ़रमाइए ।" आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का ज़िक्र** ।"*

(سنن الترمذی، الحدیث:٣٣٨٨، ج٥، ص٢٤٦)

1.... **तर्जमा :** *और अहले सुन्नत से (ग़म व मलाल दूर फ़रमा) ।*

www.dawateislami.net

नमाज़े सुब्ह़ व अ़स्र के बा'द

﴾1﴿ बिग़ैर पाऊं बदले, बिग़ैर कलाम किये

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِي وَيُمِيْتُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (1)

दस दस बार

हर बला व आफ़त व शैत़ान व मकरूहात से बचे, गुनाह मुआ़फ़ हों, उस के बराबर किसी की नेकियां न निकलें।[2]

﴾2﴿ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ مِنَ النَّارِ[3] सात सात बार

दोज़ख़ दुआ़ करे कि इलाही इसे मुझ से बचा।[4]

नमाज़े सुब्ह़ के बा'द

﴾1﴿ اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ كُلَّ مُهِمٍّ مِّنْ حَيْثُ شِئْتَ وَمِنْ اَيْنَ شِئْتَ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدِيْنِيْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدُنْيَايَ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَا اَهَمَّنِيْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ بَغٰى عَلَيَّ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ حَسَدَنِيْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ كَادَنِيْ بِسُوْٓءٍ حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَسْاَلَةِ فِي الْقَبْرِ حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ حَسْبِيَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

1.... *तर्जमा : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं उस के लिये मुल्क व ह़म्द है, उसी के हाथ में ख़ैर है, वोह ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वोह हर शै पर क़ादिर है।*

2 ......المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الشاميين، الحديث:١٨٠١٢، ج٦، ص٢٨٩

3.... *तर्जमा : ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ मुझे दोज़ख़ की आग से बचा।*

4 ......مسند ابی یعلٰی، مسند ابی هريرة، الحديث:٦١٦٤، ج٥، ص٣٧٨

www.dawateislami.net

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ[1] एक बार, या तीन बार

हर मुश्किल आसान हो, सब परेशानियां दूर हों, ईमान सलामत रहे, अल्लाह तआ़ला हर जगह मदद फ़रमाए, दुश्मन बरबाद हों, ह़ासिद अपनी आग में जलें, नज़्अ़ आसान हो, क़ब्र में शादां हो, नेकियों का पल्ला भारी हो, सिरात़ पर सह्ल जारी हो।

﴾2﴿ बा'द नमाज़े सुब्ह़ बिग़ैर पाऊं बदले बैठा हुवा ज़िक्रे इलाही में मश्ग़ूल रहे यहां तक कि आफ़ताब बुलन्द हो या'नी तुलूए़ कनारए शम्स को बीस पच्चीस मिनट गुज़र जाएं उस वक़्त दो रकअ़त नमाज़े नफ़्ल पढ़े पूरे ह़ज्ज व उ़मरह का सवाब ले कर पलटे।[2]

नमाज़े मग़रिब के बा'द

फ़र्ज़ पढ़ कर छे रकअ़तें एक ही निय्यत से, हर दो रकअ़त पर अत्तहिय्यात व दुरूद व दुआ़ और पहली, तीसरी, पांचवीं "سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ" से शुरूअ़ करे, इन में पहली दो सुन्नते मोअक्कदा

1.... *तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू जैसे और जहां से चाहे मेरे हर मुआ़मले में मुझे किफ़ायत फ़रमा, मेरे दीन के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, मेरी दुन्या के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, मेरे हर परेशान कुन मुआ़मले में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, मुझ पर सरकशी करने वाले के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, मुझ से ह़सद करने वाले के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, जो मुझे नुक़्सान पहुंचाने का इरादा करे उस के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, नज़्अ़ की तकालीफ़ के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, क़ब्र में सुवालात के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, मीज़ाने अ़मल के वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे काफ़ी है, पुल सिरात़ से गुज़रते वक़्त अल्लाह عَزَّوَجَलَّ मुझे काफ़ी है, मुझे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ काफ़ी है जिस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं मैंने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अ़र्श का मालिक है।*

2.......سنن الترمذی، کتاب السفر، باب ذکر ما یستحب من الجلوس...الخ، الحدیث:٥٨٦، ج٢، ص١٠٠

www.dawateislami.net

होंगी, बाक़ी चार नफ़्ल । येह सलाते अव्वाबीन है और अल्लाह अव्वाबीन के लिये ग़फ़ूर है ।(1)

शब में (या'नी गुरूबे शम्स से तुलूए सुब्ह तक जिस वक़्त हो)

(1) सूरए मुल्क

अज़ाबे क़ब्र से नजात है ।(2)

(2) सूरए यासीन

मग़्फ़िरत है ।(3)

(3) सूरए वाक़िआ

फ़ाक़ा से अमान है ।(4)

(4) सूरए दुख़ान

सुब्ह इस हाल में उठे कि सत्तर हज़ार फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते हैं ।(5)

---

(1) ......الدر المختار ورد المحتار، کتاب الصلاة،باب الوتر والنوافل،مطلب فی السنن والنوافل، ج۲،ص۵۴۷ والمعجم الاوسط للطبرانی،باب المیم،الحدیث:۷۲۴۵،ج۵،ص۲۵۵

(2) ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل سورة الملك،الحدیث:۲۸۹۹، ج۴،ص۴۰۷

(3) ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور و الآیات، الحدیث:۲۴۵۸،ج۲،ص۴۷۹

(4) ......شعب الایمان للبیہقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور و الآیات، الحدیث:۲۴۹۷،ج۲،ص۴۹۱

(5) ......سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل حم الدخان، الحدیث:۲۸۹۷، ج۴،ص۴۰۶

www.dawateislami.net

बा'द नमाज़े इशा

﴾1﴿ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَآ اَمَرْتَنَآ اَنْ نُّصَلِّیَ عَلَیْہِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا ھُوَ اَھْلُہٗ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰی لَہٗ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی رُوْحِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَرْوَاحِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی جَسَدِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْاَجْسَادِ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی قَبْرِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِی الْقُبُوْرِ (1)

صَلَّی اللہُ عَلٰی سَیِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ (2)

ताक़ बार जितना निभ सके, हुसूले ज़ियारते अक़्दस के लिये इस से बेहतर सीग़ा नहीं मगर ख़ालिस ता'ज़ीमे शाने अक़्दस के लिये पढ़े, इस निय्यत को भी जगह न दे कि मुझे ज़ियारत अ़ता हो, आगे उन का करम बे ह़द व इन्तिहा है।

---

1 ......سعادۃ الدارین ، تتمۃ فی الفوائد التی تفید رؤیا النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم،ص٤٤٤

2 ....*तर्जमा : ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमारे आक़ा ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم पर दुरूद नाज़िल फ़रमा जैसे तूने हमें उन पर दुरूद भेजने का हुक्म दिया, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमारे आक़ा ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा जैसे कि वोह उस के अहल हैं, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमारे आक़ा ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم पर दुरूद नाज़िल फ़रमा जैसे कि तू उन के लिये पसन्द फ़रमाता है, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! रूहों में हमारे आक़ा ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की रूहे मुबारक पर रह़मत नाज़िल फ़रमा, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ अजसाद में हमारे आक़ा ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم के जसदे मुबारक पर रह़मत नाज़िल फ़रमा, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ क़ब्रों में हमारे आक़ा ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم की क़ब्रे अन्वर पर रह़मत नाज़िल फ़रमा, ऐ **अल्लाह** ! عَزَّوَجَلَّ हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلّم पर रह़मत नाज़िल फ़रमा।*

www.dawateislami.net

فراق ووصل چہ خواہی رضائے دوست طلب　　کہ حیف باشد از و غیر او تمنائے (1)

मुंह मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ हो और दिल हुज़ूरे अक़्दस صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی آلہ واصحابہ وسلم की त़रफ़, दस्त बस्ता पढ़े, येह तसव्वुर बांधे कि रौज़ए अन्वर के हुज़ूर ह़ाज़िर हूं और यक़ीन जाने कि हुज़ूरे अन्वर صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی آلہ واصحابہ وسلم उसे देख रहे हैं, उस की आवाज़ सुन रहे हैं, उस के दिल के ख़त़रों पर मुत़्त़लअ़ हैं।

﴿2﴾ اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ط اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ط صَلِّ وَ سَلِّمْ وَ بَارِكْ اَبَدًا عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ ط اَللّٰهُ اَللّٰهُ اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ سَلَّمْ يَا غَوْثُ يَا غَوْثُ يَا غَوْثُ (2)

सो मरतबा, गुनाहों की मग़्फ़िरत, आफ़ाते दुन्यावी व उख़रवी से नजात व सफ़ाए क़ल्ब।

---

1 .... *या'नी वस्लो फ़िराक़ से क्या ग़रज़ ! मह़बूब की ख़ुश्नूदी का त़ालिब हो, दोस्त से उस के इलावा की तमन्ना करना बाइसे अफ़्सोस है।*

2 .... ***तर्जमा :*** *अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ है जिस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है जिस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं बहुत मेहरबान रह़मत वाला, ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, पाकी है तुझ को, बेशक मुझ से बेजा हुवा, ऐ अल्लाह ! عَزَّوَجَلَّ दाइमी दुरूदो सलाम और ब-र-कतें नाज़िल फ़रमा उम्मी नबी पर और उन की आल और तमाम अस्ह़ाब पर, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, मुह़म्मद صلّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلّم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उन पर रह़मत व सलामती नाज़िल फ़रमाए, ऐ फ़रयाद रस ! ऐ फ़रयाद रस ! ऐ फ़रयाद रस !*

www.dawateislami.net

सोते वक़्त

﴾1﴿ आयतुल कुर्सी शरीफ़[1] एक बार।

जब तक सोए हिफ़ाज़ते इलाही में रहे, उस के घर और गिर्द के घरों में चोरी से पनाह हो, आसेब व जिन्न का दख़्ल न हो।[2]

﴾2﴿ तस्बीहे ह़ज़रते ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھَا।[3]

सुब्ह़ निशात़ पर उठे और फ़वाइद बे शुमार।[4]

---

❶ ...... اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾

(پ۳،البقرة:۲۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अल्लाह है जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह आप ज़िन्दा और औरों का क़ाइम रखने वाला उसे न ऊंघ आए न नींद, उसी का है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में वोह कौन है जो उस के यहां सिफ़ारिश करे बे उस के हुक्म के जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे और वोह नहीं पाते उस के इल्म में से मगर जितना वोह चाहे उस की कुर्सी में समाए हुए हैं आस्मान और ज़मीन और उसे भारी नहीं उन की निगेहबानी और वोही है बुलन्द बड़ाई वाला।*

❷......شعب الایمان للبیهقی، باب فی تعظیم القرآن، فصل فی فضائل السور و الآیات، الحدیث:۲۳۹۵، ج۲، ص۴۵۸.

❸.... "سُبْحٰنَ اللّٰه" तेंतीस बार, "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" तेंतीस बार, "اَللّٰهُ اَكْبَر" चोंतीस बार।

❹......صحیح مسلم، كتاب الذكر والدعاء والتوبة والاستغفار،باب التسبیح اول النهار وعند النوم، الحدیث:۲۷۲۸،ص۱۴۶۰ ملخصاً.

www.dawateislami.net

﴾3﴿ "اَلْحَمْد"[1] व "قُلْ"[2] एक एक बार ।[3]

﴾4﴿ इब्तिदाए सूरए बक़रह से مُفْلِحُوْن तक ।[4]

---

1 ...... اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ۬ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ ۠﴿۷﴾ (پ ۱، الفاتحة)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सब ख़ूबियां **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का बहुत मेहरबान रह़मत वाला रोज़े जज़ा का मालिक हम तुझी को पूजें और तुझी से मदद चाहें हम को सीधा रास्ता चला रास्ता उन का जिन पर तूने एह़सान किया न उन का जिन पर ग़ज़ब हुवा और न बहके हुओं का ।

2 ...... قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ یَلِدْ ۬ۙ وَ لَمْ یُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۠﴿۴﴾ (پ ۳۰، الاخلاص)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है **अल्लाह** बे नियाज़ है न उसकी कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई ।

3 ...... الجامع الصغیر للسیوطی، حرف الھمزة، الحدیث: ۸۹۲، ص ۶۱

4 ...... الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۚۛ فِیْهِ ۚۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِیْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَ مَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓىِٕكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

(پ ۱، البقرة: ۱ـ۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह बुलन्द रुत्बा किताब (क़ुरआन) कोई शक की जगह नहीं उस में हिदायत है डर वालों को वोह जो बे देखे ईमान लाएं और नमाज़ क़ाइम रखें और हमारी दी हुई रोज़ी में से हमारी राह में उठाएं और वोह कि ईमान लाएं उस पर जो ऐ मह़बूब तुम्हारी त़रफ़ उतरा और जो तुम से पहले उतरा और आख़िरत पर यक़ीन रखें वोही लोग अपने रब की त़रफ़ से हिदायत पर हैं और वोही मुराद को पहुंचने वाले ।

www.dawateislami.net

और आख़िर "اٰمَنَ الرَّسُوْلُ" से ।(1)

इन दोनों के फ़वाइद बेशुमार हैं ।(2)

---

1 ......اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَیْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَ الْمُؤْمِنُوْنَؕ-كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓىٕكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ۫-لَا نُفَرِّقُ بَیْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ۫-وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَ اَطَعْنَا ﱪ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَیْكَ الْمَصِیْرُ(۲۸۵)لَا یُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَاؕ-لَهَا مَا كَسَبَتْ وَ عَلَیْهَا مَا اكْتَسَبَتْؕ-رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَاۤ اِنْ نَّسِیْنَاۤ اَوْ اَخْطَاْنَاۚ-رَبَّنَا وَ لَا تَحْمِلْ عَلَیْنَاۤ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَاۚ-رَبَّنَا وَ لَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖۚ-وَ اعْفُ عَنَّاٙ- وَ اغْفِرْ لَنَاٙ- وَ ارْحَمْنَاٙ- اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ۠(۲۸۶)

(پ۳،البقرة:۲۸۵،۲۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *रसूल ईमान लाया उस पर जो उस के रब के पास से उस पर उतरा और ईमान वाले सब ने माना अल्लाह और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को येह कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क़ नहीं करते और अ़र्ज़ की कि हम ने सुना और माना तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब हमारे और तेरी ही तरफ़ फिरना है अल्लाह किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर उस का फ़ाइदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़्सान है जो बुराई कमाई ऐ रब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चोकें ऐ रब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तूने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर मोहर कर तू हमारा मौला है तू काफ़िरों पर हमें मदद दे ।*

2 ......صحيح البخاری، كتاب فضائل القرآن، باب فضل البقرة، الحديث:۵۰۰۹، ج۳، ص۴۰۵ و شعب الايمان للبيهقی، باب فی تعظيم القرآن، فصل فی فضائل السور والآيات، الحديث:۲۴۱۲، ج۲، ص۴۶۴.

www.dawateislami.net

﴾5﴿ "اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا" से आख़िर "كَهْف" तक चार आयतें।(1) शब में या सुब्ह़ जिस वक़्त जागने की निय्यत से पढ़े आंख खुलेगी।(2)

﴾6﴿ दोनों कफ़े दस्त फैला कर तीनों (3)"قُلْ" एक एक बार पढ़ कर

---

1 ...... اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿۱۰۷﴾ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا لَا یَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿۱۰۸﴾ قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَ لَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَاۤ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ یُوْحٰۤى اِلَیَّ اَنَّمَاۤ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْیَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّ لَا یُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖۤ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾ (پ۱٦، الكهف ۱۰۷۔۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये फ़िरदौस के बाग़ उन की मेहमानी है वोह हमेशा उन में रहेंगे उन से जगह बदलना न चाहेंगे तुम फ़रमा दो अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समुन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और उसकी मदद को ले आएं तुम फ़रमाओ ज़ाहिर सूरते बशरी में तो मैं तुम जैसा हूं मुझे वह्य आती है कि तुम्हारा मा'बूद एक ही मा'बूद है तो जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

2 ......سنن الدارمی، كتاب فضائل القرآن، الحديث: ٣٤٠٦، ج٢، ص٥٤٦

3 ...... قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿۲﴾ لَمْ یَلِدْ ۙ وَ لَمْ یُوْلَدْ ﴿۳﴾ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾ (پ۳۰، الاخلاص)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है **अल्लाह** बे नियाज़ है न उसकी कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿۲﴾ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ﴿۴﴾ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾ (پ ۳۰، الفلق)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है उसकी सब मख़्लूक़ के शर से और अन्धेरी डालने वाले के शर से जब वोह डूबे और उन औरतों के शर से जो गिर्हों में फूंकती हैं और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले।

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ﳔ الْخَنَّاسِ ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾ (پ۳۰، الناس)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब सब लोगों का बादशाह सब लोगों का ख़ुदा उस के शर से जो दिल में बुरे ख़त़रे डाले और दबक रहे वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं जिन्न और आदमी।

www.dawateislami.net

इन पर दम कर के सर और चेहरे और सीने और आगे पीछे जहां तक हाथ पहुंचे सारे बदन पर फैर ले, फिर दोबारा सेहबारा इसी त़रह़, हर बला से मह़फ़ूज़ रहेगा।(1)

﴾7﴿ सूरह (2)قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ पर ख़ातिमा करे। इस के बा'द कलाम की ह़ाजत हो तो बात कर के फिर पढ़ ले कि इसी पर ख़ातिमा होगा।(3) اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی

सोते से उठ कर

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْۤ اَحْیَانَا بَعْدَ مَاۤ اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ (4)

क़ियामत में भी اِنْ شَاءَ اللّٰه تعالٰی **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्द करता उठेगा।

तम्बीह : *ऊपर से यहां तक जितनी दुआ़एं लिखी गईं हर एक के अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ ज़रूरी है।*

तहज्जुद

फ़र्ज़े इशा पढ़ने के बा'द कुछ देर सो रहे फिर शब में तुलूए़ सुब्ह़ से पहले जिस वक़्त आंख खुले अगर्चे रात के नव बजे,

---

1 ......صحيح البخارى كتاب فضائل القرآن،باب فضل المعوذات،الحديث:٥٠١٧، ج٣،ص٤٠٧ وتفسير روح البيان،سورة يوسف،تحت الآية:٦٧،ج٤،ص٢٩٥

2 ......قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَ لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِیْنُكُمْ وَلِیَ دِیْنِ ۠﴿۶﴾ (پ٣٠،الكافرون)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो न मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजूंगा जो तुम ने पूजा और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन*

3 ......الجامع الصغير للسيوطى، حرف الهمزة ، الحديث: ٣٦٧، ص ٢٨ و فيض القدير للمناوى، حرف الهمزة ، تحت الحديث : ٣٦٧ ، ج١، ص٣٢٤

4 ....***तर्जमा :*** *तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** तआ़ला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द ह़यात (बेदारी) अ़त़ा फ़रमाई और हमें उसी की त़रफ़ लौटना है।*

(صحيح البخارى، كتاب الدعوات، باب مايقول اذا نام، الحديث:٦٣١٢،ج٤،ص١٩٢)

www.dawateislami.net

या जाड़ों में पौने सात बजे इशा पढ़ कर सो रहे और सात सवा सात बजे आंख खुले वोही वक़्त तहज्जुद का है, वुज़ू कर के कम अज़ कम दो रकअ़त पढ़ ले तहज्जुद हो गया और सुन्नत आठ रकअ़त हैं।[1] और मा'मूले मशाइख़ 12 रकअ़त, क़िराअत का इख़्तियार है जो चाहे पढ़े, और बेहतर येह कि जितना कुरआने मजीद याद हो उस की तिलावत इन रकअ़तों में करे, अगर कुल याद हो तो कम से कम तीन रात ज़ियादा से ज़ियादा चालीस रात में ख़त्म करे, न याद हो तो हर रकअ़त में तीन तीन बार सूरए इख़्लास कि जितनी रकअ़तें पढ़ेगा उतने ख़त्मे कुरआने मजीद का सवाब मिलेगा।

ज़िक्रे चहार ज़र्बी

चार ज़ानू बैठे, बाएं ज़ानू की रगे कीमास दहने पाऊं के अंगूठे और उस की बराबर की उंगली में दबा ले फिर सर झुका कर बाएं घुटने के मुहाज़ी ला कर “ لَا ” का लाम यहां से शुरूअ़ कर के दहने घुटने के मुहाज़ात तक खींचता हुवा ले जाए, अब यहां से “ اِلٰهَ ” का हम्ज़ा शुरूअ़ कर के लाम के बा'द का अलिफ़ दहने शाने तक खींचता ले जाए और “ ہٗ ” दहनी त़रफ़ ख़ूब मुंह फैर के कहे, फिर वहां से “اِلَّا اللّٰه” ब कुव्वत दिल पर ज़र्ब करे। सो बार, या ह़स्बे कुव्वत कम से शुरूअ़ करे फिर ह़स्बे त़ाक़त व फ़ुरसत बढ़ाता जाए, बेहतर येह है कि पांच हज़ार ज़र्ब रोज़ाना तक पहुंचाए, जब ह़रारत बढ़ने लगे हर सो बार के बा'द एक या तीन बार “مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحٰبِهٖ وَسَلَّمَ” कह ले तस्कीन पाएगा, मगर मुब्तदी जब तक ज़ंग दूर न हो ख़ालिस ह़रारत का मोह़ताज है।

---

1 ......ردالمحتار، کتاب الصلاۃ، باب الوتر والنوافل، مطلب فی صلاۃ اللیل، ج۲، ص۵٦٦۔۵٦٧

www.dawateislami.net

येह ज़िक्र ऐसे वक़्त हो या ऐसी जगह हो कि रिया न आए, किसी नमाज़ी, ज़ाकिर या मरीज़ या सोते को तश्वीश न हो, अगर देखे कि रिया आता है तो न छोड़े और ख़याले रिया को दफ़्अ़ करे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ उस के नबी صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی آلہ واصحابہ وسلم के तवस्सुल से रुजूअ़ लाए, ताइब हो। اِنْ شَآءَ اللّٰہ रिया से महफ़ूज़ रहेगा या रिया दफ़्अ़ हो जाएगा।

ज़िक्रे ख़फ़ी

दो ज़ानू आंख बन्द किये, ज़बान को तालू से जमाए कि मुतहर्रिक न हो महज़ तसव्वुर से कि सांस की आवाज़ भी न सुनाई दे, इन पांच तरीक़ों से जो तरीक़ा चाहे इख़्तियार करे ख़्वाह वक़्तन फ़ वक़्तन पांचों बरते :

﴾1﴿ सर झुका कर नाफ़ से "لَا" का लाम निकाल कर सर बतदरीज ऊपर उठाता हुवा "اِلٰہَ" की "ہ" दिमाग़ तक ले जाए और मअ़न "اِلَّا اللّٰہ" का पहला हम्ज़ा वहां से शुरूअ़ कर के उस की ज़र्ब नाफ़, ख़्वाह दिल पर करे।

﴾2﴿ इसी तौर पर "لَا اِلٰہَ اِلَّا ھُوَ" इस में दूसरा जुज़ "اِلَّا ھُوَ" होगा।

﴾3﴿ सिर्फ़ "اِلَّا اللّٰہ" को पहला हम्ज़ा नाफ़ से उठा कर "اِلَّا ال" दिमाग़ तक ले जाए और मअ़न "لٰہ" वहां से उतार कर नाफ़ या दिल पर ज़र्ब करे।

﴾4﴿ फ़क़त "اَللّٰہ" पहला हम्ज़ा नाफ़ से शुरूअ़ कर के "لَا" को दिमाग़ तक पहुंचाए और बदस्तूर "ہ" की ज़र्ब करे।

﴾5﴿ महज़ "اَللّٰہ" ब सुकूने हा पहला हम्ज़ा नाफ़ से उठा कर "लाम" दिमाग़ तक और "لَاہْ" की ज़र्ब। इसे सो बार से शुरूअ़ कर के हस्बे

www.dawateislami.net

वुस्अ़त हज़ारों तक पहुंचाए और इन पांचों में अफ़्ज़ल पहला त़रीक़ा है, येह त़रीक़े इस दरजा मुफ़ीद हैं कि इन्हें इख़्फ़ा करते हैं, रुमूज़ में लिखते हैं, फ़क़ीर ने ख़ास अपने बिरादराने त़रीक़त के लिये इसे आ़म किया।

पासे अन्फ़ास

इन्हीं पांचों त़रीक़ों से जिसे चाहे हर सांस की आमदो रफ़्त में खड़े बैठे, चलते फिरते, वुज़ू बे वुज़ू बल्कि क़ज़ाए ह़ाजत के वक़्त भी मल्ह़ूज़ रखे यहां तक कि इस की आ़दत पड़ जाए और तकल्लुफ़ की ह़ाजत न रहे अब सोते में भी हर सांस के साथ ज़िक्र जारी रहेगा।

तसव्वुरे शैख़

ख़ल्वत में आवाज़ों से दूर, रू ब मकाने शैख़, और विसाल हो गया तो जिस त़रफ़ मज़ारे शैख़ हो उधर मुतवज्जेह बैठे, मह़ूज़ ख़ामोश, बा अदब, ब कमाले ख़ुशूअ़ सूरते शैख़ का तसव्वुर करे और अपने आप को उस के ह़ुज़ूर ह़ाज़िर जाने और येह ख़याल दिल में जमाए कि सरकारे रिसालत علیہ افضل الصلوۃ والتحیۃ से अन्वार व फ़ुयूज़ शैख़ के क़ल्ब पर फ़ाइज़ हो रहे हैं, मेरा क़ल्ब क़ल्बे शैख़ के नीचे ब ह़ालते दरयूज़ा गरी[1] लगा हुवा है, उस में से अन्वारो फ़ुयूज़ उबल उबल कर मेरे दिल में आ रहे हैं, इस तसव्वुर को बढ़ाए यहां तक कि जम जाए और तकल्लुफ़ की ह़ाजत न रहे, इसकी इन्तिहा पर सूरते शैख़ ख़ुद मुतमस्सिल हो कर मुरीद के साथ रहेगी और हर काम में मदद करेगी और इस राह में जो मुश्किल उसे पेश आएगी उस का ह़ल बताएगी।

1.... *या'नी साइल की त़रह़*

www.dawateislami.net

तम्बीह : अज़्कारो अश्ग़ाल में मश्ग़ूली से पहले अगर क़ज़ा नमाज़ें या रोज़े हों उन का अदा करना जिस क़दर मुम्किन हो निहायत ज़रूर है, जिस पर फ़र्ज़ बाक़ी हो उस के नफ़्ल व आ'माले मुस्तहृब्बा काम नहीं देते बल्कि क़बूल नहीं होते जब तक फ़र्ज़ अदा न कर ले। अज़्कारो अश्ग़ाल के लिये तीन बद्र क़ों[1] की ज़रूरत है तक़्लीले तृआम (कम खाना) तक़्लीले कलाम (कम बोलना) तक़्लीले मनाम (कम सोना)। وَ بِاللهِ التَّوْفِيْق

फ़क़ीर, अहमद रज़ा क़ादिरी غفر له

पन्जुम मुहर्रमुल हराम सि. 1338 हि.

ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसरत किया करो

*हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने अ़र्ज़ किया : "या रसूलल्लाह! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मुझे कोई नसीहत फ़रमाइये।" फ़रमाया : "गुनाहों को छोड़ दो क्यूंकि येह सब से अफ़्ज़ल हिजरत है और फ़राइज़ की पाबन्दी किया करो क्यूंकि येह सब से अफ़्ज़ल जिहाद है और ज़िक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसरत किया करो क्यूंकि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कसरते ज़िक्र से ज़ियादा पसन्दीदा चीज़ नहीं पेश कर सकती।"*

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث:٣١٣، ج٢٥، ص١٢٩)

1.... *मुआविनीन (मुआवनत करने वालों)*

www.dawateislami.net

مآخذ ومراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعه
قرآن مجید	کلام باری تعالٰی	برکات رضا ھند
ترجمۂ قرآن کنز الایمان	اعلٰی حضرت امام احمد رضاالبریلوی ۱۳۴۰ھ	برکات رضا ھند
الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمٰن السیوطی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
تفسیر روح البیان	امام اسماعیل حقی بن مصطفی البروسوی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ
صحیح البخاری	امام ابوعبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن الحجاج القشیری ۲۶۱ھ	دار ابن حزم بیروت
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجہ۲۷۳ھ	دار المعرفۃ بیروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث ۲۷۵ھ	دار الفکر بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسٰی محمد بن عیسٰی ترمذی۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت
المصنف	حافظ عبداللّٰہ بن محمد بن ابی شیبۃ الکوفی ۲۳۵ھ	دار الفکر بیروت
المسند	امام احمد بن حنبل ۲۴۱ھ	دار الفکر بیروت
سنن الدارمی	امام عبد اللّٰہ بن عبد الرحمن الدارمی۲۵۵ھ	دار الفکر بیروت
السنن الکبرٰی	امام ابو عبد الرحمٰن احمد النسائی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المسند	امام ابو یعلی احمد بن علی الموصلی۳۰۷ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ھ	دار احیاء التراث العربی

www.dawateislami.net

المعجم الاوسط	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ٣٦٠ھ	دار الفکر بیروت
عمل الیوم واللیلة	حافظ ابو بکر احمد بن محمد الدینوری ٣٦٤ھ	دارالکتاب العربی
المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم النیشاپوری ٤٠٥ھ	دار المعرفة بیروت
حلیة الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ اصبہانی ٤٣٠ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیہقی ٤٥٨ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
فردوس الاخبار	حافظ ابوشجاع شیرویہ بن شہر دار الدیلمی ٥٠٩ھ	دارالفکر بیروت
الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان	امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی ٧٣٩ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مشکاة المصابیح	امام محمد بن عبد اللّٰہ الخطیب التبریزی ٧٤٢ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مجمع الزوائد	امام نور الدین علی بن ابی بکر ٨٠٧ھ	دار الفکر بیروت
الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبد الرحمن السیوطی ٩١١ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
کشف الخفاء	امام شیخ اسماعیل بن محمد جراحی ١١٦٢ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
فیض القدیر	امام محمد عبد الرء وف المناوی ١٠٣١ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
الدرالمختار	امام علاء الدین محمد بن علی حصکفی ١٠٨٨ھ	دارالمعرفة بیروت
ردالمحتار	محمد امین بن عمر المعروف ابن عابدین ١٢٥٢ھ	دارالمعرفة بیروت
سعادة الدارین	امام یوسف بن اسماعیل النبہانی ١٣٥٠ھ	دار الکتب العلمیة بیروت

www.dawateislami.net

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या की त़रफ़ से पेश कर्दा क़ाबिले मुत़ालआ़ कुतुब

शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعالٰی عَلَيه

(1) करन्सी नोट के शरई अह़कामात :

(अल किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम फ़ी क़िरत़ासिद्दराहिम) (कुल सफ़ह़ात : 199)

(2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)

(अल याक़ूतितुल वासित़ह) (कुल सफ़ह़ात : 60)

(3) ईमान की पहचान (ह़ाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़ह़ात : 74)

(4) मआ़शी तरक़्क़ी का राज़

(ह़ाशिया व तशरीह़ तदबीरे फ़लाह़ो नजात व इस्लाह़) (कुल सफ़ह़ात : 41)

(5) शरीअ़त व त़रीक़त

(मक़ालुल उ़-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ़ व उ़-लमाअ) (कुल सफ़ह़ात : 57)

(6) सुबूते हिलाल के त़रीक़े (तु-रक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़ह़ात : 63)

(7) आ'ला ह़ज़रत से सुवाल जवाब (इज़्हारिल ह़क़्क़िल जली) (कुल सफ़ह़ात : 100)

(8) ई़दैन में गले मिलना कैसा ?

(विशाहुल जीद फ़ी तह़लीलि मुआ़नि-क़तिल ई़द) (कुल सफ़ह़ात : 55)

(9) राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल (रद्दिल कहूति़ वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फ़ु-क़राअ) (कुल सफ़ह़ात : 40)

(10) वालिदैन, ज़ौजैन और असातिज़ा के हुक़ूक़

(अल हुक़ूक़ लि त़र्ह़िल उ़क़ूक़) (कुल सफ़ह़ात : 125)

(11) दुआ़ के फ़ज़ाइल

(अह़्सनुल विआ़अ लि आदाबिद्दुआ़अ मअ़ह़ ज़ैलुल मुद्दआ़ लि अह़्सनिल विआ़अ) (कुल सफ़ह़ात : 140)

www.dawateislami.net

शाएअ़ होने वाली अ़-रबी कुतुब

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن

(12) किफ़्लुल फ़क़ीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़ह़ात : 74) । (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़ह़ात : 77) । (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़ह़ात : 62) । (15) इक़ा-मतुल क़ियामह (कुल सफ़ह़ात : 60) । (16) अल फ़ज़्लुल मौहबी (कुल सफ़ह़ात : 46) । (17) अज्लल ए'लाम (कुल सफ़ह़ात : 70) । (18) अज़्ज़म-ज़-मतुल क़-मरिय्यह (कुल सफ़ह़ात : 93) । (19,20,21) जद्दुल मुम्तार अ़ला रद्दिल मुह़तार (अल मुजल्लद अल अव्वल वस्संनी) (कुल सफ़ह़ात : 713,677,570)

शो'बए इस्लाही कुतुब

(22) ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَل (कुल सफ़ह़ात : 160)

(23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़ह़ात : 200)

(24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़ह़ात : 33)

(25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़ह़ात : 164)

(26) इम्तिह़ान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़ह़ात : 32)

(27) नमाज़ में लुक़्मा के मसाइल (कुल सफ़ह़ात : 39)

(28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़ह़ात : 152)

(29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़ह़ात : 43)

(30) निसाबे म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़ह़ात : 196)

(31) काम्याब त़ालिबे इ़ल्म कौन ? (कुल सफ़ह़ात : तक़रीबन 63)

(32) फ़ैज़ाने एह़याउल उ़लूम (कुल सफ़ह़ात : 325)

(33) मुफ़्तिये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़ह़ात : 96)

(34) ह़क़ व बात़िल का फ़र्क़ (कुल सफ़ह़ात : 50)

(35) तह़क़ीक़ात (कुल सफ़ह़ात : 142)

(36) अर-बईने ह़-नफ़िय्यह (कुल सफ़ह़ात : 112)

www.dawateislami.net

(37) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)

(38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)

(39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)

(40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)

(41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)

(42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)

(43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)

(50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)

(51) ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہ تَعَالٰی عَنْہُ के हालात (कुल सफ़हात :106)

(52) तआ़रुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)

(53) रहनुमाए जदवल बराए म-दनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)

(54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)

(55) म-दनी कामों की तक़्सीम (कुल सफ़हात : 68)

(56) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

(57) तरबिय्यते औलाद (कुल सफ़हात : 187)

(58) आयाते क़ुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)

(59) अहादीसे मुबा-रका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)

(60) फ़ैज़ाने चहल अहादीस (कुल सफ़हात : 120)

(61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

शो'बए तराजिमे कुतुब

(62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल (अल मुत्जरुर्राबेह फ़ी सवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)

(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आ़रिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)

(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़)(कुल सफ़हात : 74)

(65) राहे इ़ल्म (ता'लीमुल मु-तअ़ल्लिम त़रीक़ुत्तअ़ल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)

(66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद)(कुल सफ़हात : 64)

www.dawateislami.net

(67) अद्दा'वति इल्ल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)

(68) आंसूओं का दरिया (बहूरुद्दुमूअ़) (कुल सफ़हात : 300)

(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुर्रतुल उ़यून)

(कुल सफ़हात : 136)

(70) उ़यूनुल हि़कायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

शो'बए दर्सी कुतुब

(71) ता'रीफ़ाते नह़्विय्यह (कुल सफ़हात : 45)

(72) किताबुल अ़क़ाइद (कुल सफ़हात : 64)

(73) नुज़्हतुन्नज़र शर्हे नख़्बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)

(74) अर-बई़निन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)

(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़हात : 79)

(76) गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)

(77) वक़ा-यतिन्नह़्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह़्व

(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

शो'बए तख़रीज

(79) अ़जाइबुल कु़र्आन मअ़ ग़राइबुल कु़र्आन (कुल सफ़हात : 422)

(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)

(81) बहारे शरीअ़त, जिल्द अव्वल (हि़स्सा : 1 से 6)

(82) बहारे शरीअ़त, जिल्द दुवुम (हि़स्सा : 7 से 13)

(83) बहारे शरीअ़त, जिल्द सिवुम (हि़स्सा : 14 से 20)

(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)

(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)

(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)

(87) सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का इश्क़े रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

(कुल सफ़हात : 274)

www.dawateislami.net

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत

(88) सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पैग़ाम अत्तार के नाम (कुल सफ़्हात : 49)
(89) मुक़द्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)
(90) इस्लाह का राज़ (म-दनी चैनल की बहारें हिस्सए दुवुम)(कुल सफ़्हात : 32)
(91) 25 क्रिस्चेन क़ैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 33)
(92) दा'वते इस्लामी की जैल खाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)
(93) वुज़ू के बारे में वस्वसे और उन का इलाज (कुल सफ़्हात : 48)
(94) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त सिवुम (सुन्नते निकाह) (कुल सफ़्हात : 86)
(95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्हात : 275)
(96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़्हात : 48)
(97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात :48)
(98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्हात : 48)
(99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्हात : 55)
(100) दा'वते इस्लामी की म-दनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)
(101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़्हात : 33)
(102) मैं ने म-दनी बुर्क़अ़ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्हात : 33)
(103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़्हात : 32)
(104) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (2)(कुल सफ़्हात : 48)
(105) ग़ाफ़िल दर्ज़ी (कुल सफ़्हात : 36)
(106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्हात : 33)
(107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्हात : 32)
(108) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (1) (कुल सफ़्हात : 49)
(109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्हात : 33)
(110) तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त (4) (कुल सफ़्हात : 49)
(111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़्हात : 32)
(112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्हात : 32)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़्ह़ा	उ़नवान	सफ़्ह़ा

www.dawateislami.net

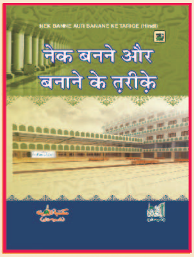

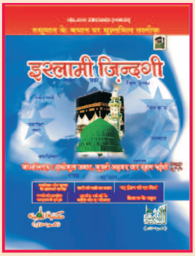

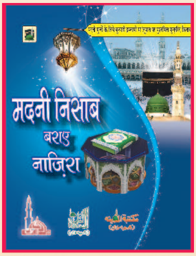

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माह़ोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की ह़िफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक्तबतुल मदीना की शाख़ें

देहली : उर्दू मार्केट, मटया मह़ल, जामेअ़ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन (011) 23284560

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाह़े दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, ह़ैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

मक्तबतुल मदीना

सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1 , गुजरात, अल हिन्द MO. 9374031409

مکتبۃ المدینہ (دعوتِ اسلامی)

Web : www.dawateislami.net / E- mail:maktabaahmedabad@gmail.com